"आत्मा के शत्रुओं को जितने वाला बनता है परमात्मा"

– युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं 17 सितम्बर।

"आदमी के जीवन में राग का प्रभाव होता है और द्वेष का प्रभाव भी होता है । सामान्यत व्यक्ति के सामने कोई प्रिय वस्तु आ जाती है तो उसके प्रति मोह हो जाता है और कोई प्रतिकूल अर्थात मन के अनुकूल वस्तु नहीं होती है तो उसमें द्वेष का भाव आ जाता है। साधक के लिए यह आवश्यक है कि वह अनुकूल और प्रतिकूलता में सम रहने का अभ्यास करे।"

उक्त विचार युवाचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

युवाचार्यश्री ने गीता के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि गीता में भी यही कहा गया है। जब तक व्यक्ति में राग–द्वेष की पकड़ रहती है तब तक आसक्ति बनी रहती है वह उससे छूट नहीं सकता। साधना का मुख्य लक्ष्य यही रहे कि प्रियता और अप्रियता का भाव न आए। स्थितप्रज्ञ वह व्यक्ति होता है जो राग–द्वेष नही करता। प्रेक्षाध्यान का सूत्र भी यही बताया गया है कि केवल देखना राग–द्वेष नहीं करना है।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि मनुष्य में जब पदार्थों, भोगों के प्रति राग हो जाता है तो वे उसे फंसाने वाले होते हैं और जब द्वेष व लोभ का भाव उग्र हो जाता है तो उसका दूसरे व्यक्तियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं रहता। सुखी व अहिंसक जीवन जीने के लिए जरूरी है कि राग, द्वेष पर नियंत्रण करने की कला का विकास करे। जिस तरह एक चींटी धीरे–धीरे चलती हुई अपने लक्ष्य तक पहुंच जाती है और एक तेज गति वाला पक्षी यदि गति नहीं करता है तो वह लक्ष्य तक पहुंच नहीं पाता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति धीरे–धीरे राग–द्वेष मुक्त होने की साधना करता है तो वह लक्ष्य तक पहुंचा जाता है और अपने जीवन का कल्याण कर लेता है।

जो व्यक्ति कषाय को जीत लेता है वह अपनी आत्मा के शत्रुओं को जीत लेता है। आत्मा से परमात्मा बनने के लिए जरूरी है कषाय पर विजय प्राप्त करें।